ISSN : 2581-3943

Eklavya

A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal

School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)

Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in

Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

INDEX

1.	**जैनेन्द्र के सुनीता उपन्यास का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन**	डॉ. सोनल पी. पटेल	**1-8**
2.	ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીની પદ્ધતિ	રામદે. ડી. શિડા	**9-13**
3.	નવમાં ધોરણના અંગ્રેજી વ્યાકરણના પસંદિત Tense ' (કાળ) એકમના અધ્યાપન માટે દ્રશ્ય-શ્રાવ્ય કાર્યક્રમની સંરચના અને તેની અસરકારકતા	ઘનશ્યામભાઈ એસ. ભીલ	**14-20**
4.	**Technological skills for future teacher education**	**Jadeja Nitaba Rupsinh** **Dr. Hinaben D. Raval**	**21-26**

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in

Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

जैनेन्द्र के सुनीता उपन्यास का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सोनल पी. पटेल
अध्यापिका, हिन्दी बी.एड्. विभाग
शिक्षण विद्याशाखा(IASE), गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14
sonalpatel2009@rediffmail.com
M. 7802070574

मुंशी प्रेमचंद के समकालीन और उनके उत्तरवर्ती हिन्दी गद्य लेखकों में जैनेन्द्र कुमार जैन का नाम हिन्दी जगत में बड़े सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है । जैनेन्द्र ने समाज के जिस वर्ग मै जन्म लिया था, उस कुल परंपरा का संस्कार पैतृक-पारिवारिक रूप में उन्हें मिला था, उसमें मानवीय संवेदनाओं के प्रति एक मूल्यमयी उदार नीतिमता के भाव बीजरूप से विद्यमान था । जैनेन्द्र जैन मूलतः एक विचारक थे, द्रष्टा थे, अपने आसपास घटती घटनाओं को बड़ी बारी की से देखते थे । जैनेन्द्र जैन हर तरह के ढोंग के खिलाफ थे ! सोचते बहुत थे, हर पल, हर क्षण अहर्निश चिंतन में डूबे रहते थे, लेकिन फिलॉसफर नहीं थे, दार्शनिक नहीं थे ! जैनेन्द्र कुमार प्रेमचन्द युग में अवतरित उपन्यासकार है । फिर भी उनकी औपन्यासिक चेतना का साम्यक विकास प्रेमचन्द के बाद ही हो पाया है । वे ही ऐसे पेमचन्दोत्तर उपन्यासकार हैं, जिन्होंने हिन्दी उपन्यास को वस्तुजगत के बहिरंग पक्ष से मानव मन के अन्तर्गत की ओर ले जाकर मानव की अंतरंग सच्चाईयों से उसे जोड़ दिया । जैनेन्द्र कुमार के लगभग सभी उपन्यास उनके व्यक्तिवादी जीवनदर्शन से फलतः उनके साहित्य में समाज से बढ़कर व्यक्ति की अधिक प्रधानता रहती है । वे समाज के तथाकथित नियमों एवं बन्धनों से प्रायः मुक्त रहना चाहते है । जैनेन्द्र कुमार ने सन 1929 में उनका पहला उपन्यास ‘परख’ निकाला संवेदन और संरचना दोनों पक्षों पर अपने समय की प्रवृत्तियों से यहं उपन्यास अलग पड़ता है । वस्तुतः जैनेन्द्र का ‘परख’ हिन्दी उपन्यास में आदमी के आन्तरिक जगत के व्यापारों का विश्लेषण का विषय बनाकर एक नई साहित्यिक दिशा उद्घाटित करने में प्रथम प्रयास रहा है । उन्होनें सृजनप्रक्रिया को अपनी ओर से एक नई दिशा का उद्घाटन कर एक ओर अपनी मौलिकता प्रमाणिकता की और दूसरी ओर हिन्दी कथा साहित्य को संवेदनामूलक गहराई से गंभीर बनाया । ‘परख’ जैनेन्द्र के सृजनात्मक जीवन के रूस.... दिशान्तर के आरंभ को सूचित करता है । इसमें जैनेन्द्र ने अपनी दृष्टि जीवन के बाहरी जगत से हटा लेकर मानव के मनोजगत की आन्तरिक गुत्थियों, ग्रंन्थियों और संबंन्धमूलक अन्तः संघर्षो के विश्लेषण में लगा दिया । बाहरी जीवन के स्थूल तथ्यों को छोड़कर नारी-पुरुष संबन्ध के विविध पक्षों के विश्लेषण के द्वारा जैनेन्द्र ने हिन्दी औपन्यासिक कला को जो नया भाव और स्वर प्रदान किया, उसका श्रीगणेश करनेवाला यह उपन्यास सहृदयों के

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

बीच मुक्तकंठ की प्रशंसा का पात्र बना । जैनेन्द्र कुमार का दूसरा उपन्यास 'सुनीता' सन 1934 में प्रकाशित हुआ । उसमें भी पचीदे नारी-पुरुष संबन्ध की एक विशिष्ट पक्ष के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का प्रयास ही किया गया है ।

सुनीता : पुरुष की शोधक शक्ति के रूप में नारी अहम्

जैनेन्द्र के उपन्यासों में विकृत होनेवाले नारीमूलक अहम् का एक दूसरा चेहरा सुनीता जीवनमोहिनी और अनीता आदि पात्रों में देखने को मिलता है । पुरुष के जीवन में पुरुष की शोधक शक्ति के रूप में नारी का विशेष महत्त्व है । जब हम कहते है कि हर पुरुष की सफलता के पीछे एक नारी रहती है तो उसमें उसके प्रेरणादायक स्वरूप के साथ साथ उसके सुधारात्मक पक्ष का समर्थन भी होता है । जैसे प्रसाद कहते हैं नारी श्रध्धामयी है, कामरूपा है, विश्वासमयी है नारी का अहम् इस कारण पुरुष से जुडकर उसके उत्कर्ष में भागीदार होकर ही परितृष्ट होता है, चरितार्थ होता है । जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी के अहम् के ऐसे चरितार्थ होने का प्रभूत मात्रा में चित्रण उपलब्ध होता है । सुनीता के पात्र में हरिप्रसन्न के संदर्भ में इस प्रकार की अहंविवृत्ति देखने को मिलती है । अपने आत्ममित्र हरिप्रसन्न के सशस्त्र क्रान्ति के मार्ग को अपनाकर गुमराह होते देखकर उसे साधारण जीवन के मार्ग पर लौटा लेने के लिए श्रीकांत जब अपनी पत्नी सुनीता की सहायता ले लेता है तब से सुनीता में सुप्त रही सहज सुधारात्मक मांगलिक सता ऊर्जस्वित हो उठती है । सुनीता पर हरिप्रसन्न के सुधार का दायित्व जब समर्पित होता है, तब उसका मन इसे उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लेता है, कि संतानहीन दाम्पत्यजीवन से उत्पन्न एकान्तता और अकेलापन उसके अस्तित्व को नीरस ही नहीं बना रहे थे बल्कि निरर्थकता की शून्यता से उत्पीडित भी कर रहे थे । पति के सामने अपने अकृतार्थ नारीत्व के अहमबोध से कंठित अहम उसे सता रहा था जब कि पति श्रीकांत अपनी पत्नी को इस विरसता से मुक्त करके रिझालेंने के उपाय सुनकर उदास हो रहा था, दोनों एक-दूसरे के सामने अपने को सफल पुरुष या सफल नारी दिखा नहीं सकते । इससे उन दोनों के बीच उत्पन्न फासला इतना असहनीय बन जाता है कि उससे बचने के उपाय के रूप में भी श्रीकांत अपने पुराने मित्र हरिप्रसन्न को याद करता है । सुनीता के अन्दर बढ़ी यौनकुंढा और उदासी से श्रीकांत बिलकुल आतुर हो उठता है । इसलिए हरिप्रसन्न को केवल एक मित्र से मिलने की उत्सुकता से बढ़कर अपने जीवन को विशेषकर अपनी पत्नी को सर्वनाश से बचाने की संजीवनी औषधी के रूप में एक अनिवार्य माँग के अनुभव से उसकी तलाश में निकलता है । अपने अन्दर अनुभूत असन्तुष्टि ही परोक्ष रूप में हरिप्रसन्न के आगमन पर सुनीता को उत्साहित करती है ।

"श्रीकांत और सुनीता के परस्पर संयुक्त जीवन में ईश्वर कुछ प्रमाद, जडता और बन्धन का बोध आ चला था । उस शांत अलस तल पर हरिप्रसन्न आविर्भूत हुआ । वहाँ लहर उठ लहरी । नींद जामी । प्रशांतता अशांत हुई। किन्तु इससे उस संयुक्त जीवन के अंतरंग को कुछ हर्ष और रसास्वाद की ही अनुभूति प्राप्त हुई" ।

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

सुनीता को श्रीकांत हरिप्रसन्न की सेवा में रख देता है और उसे वह बता भी देता है कि हरिप्रसन्न को सब प्रकार से संतुष्ट बना लिया जाए । उसके लिए वह सुनीता को सब प्रकार की स्वतंत्रता की अनुमति देता है, यहाँ तक कहता है कि **“तुम उन दिनों के लिए अपने को उसकी इच्छा के नीचे छोड़ देना । यह समझना कि मैं नहीं हूँ । तुम हो और तुम्हारे लिए काम्य कर्म कोई नहीं है । इस भाँति निषिद्ध कर्म भी नहीं रहेगा” ।** यधपि शुरु शुरु में हरिप्रसन्न के साथ उसके व्यवहार में नारी सहज संकोच और दूरी दष्टिगत होती है फिर भी यह देखकर कि हरिप्रसन्न पर अपने रूप का असर पड गया है और वह उसकी उपदेशों और बातों का अनुसरण करता है तो अन्दर ही अन्दर उसका नारीत्व संतुष्ट होता अनुभव होने लगता है । नारीगत अहम् का यह हल्का परितोष उसे उस समय तक की उसकी उदासी और वर्थता के एहसास से मुक्त करता है और उत्तरोत्तर उसकी सेवा में वह खुलकर लगने लगती है । हरिप्रसन्न के व्यक्तिगत मामलों में ऐसे उत्साह से, ऐसी ममता से, ऐसे अपनेपन से हस्तक्षेप करती है कि वही निश्चित करती है, कि हरिप्रसन्न कैसे बरते, क्या खाए, दाढी-मूँछ संवारे या नहीं, कहाँ कहाँ जाए, न जाए । हरिप्रसन्न के अन्दर अपने प्रति बढ़ती आदर भावना, ‘भाभी’ कहकर संबोधन आदि सुनीता के अन्दर फिर से जमे नारी अहम् के जोर पकड़ने में सहायक सिध्ध होते है । वास्तव में हरिप्रसन्न के आगमन के प्रथम दिन में ही स्टडी रूम को साफ करती अस्तव्यस्त सूरत में रही सुनीता को देखकर मुग्ध भाव से रहनेवाले हरिप्रसन्न से हुई भेंट ने उसके अन्दर की नारी को लज्जित ही नहीं किया, बल्कि उस संकोच भाव के पीछे उसके नारीगत अह्म् का परितोषपूर्ण जागरण भी दृश्यमान है । वही ऊर्जस्वित अहम् बादमें सज संवारकर हरिप्रसन्न कै सामने प्रस्तुत होने को उसे उत्साहित करता है ।

दिनों के बढ़ते बढ़ते उनके संबन्ध में ऐसी आत्मीयता आ जाती है कि सुनीता के प्रति हरिप्रसन्न के अन्दर श्रध्धा और ममता बढ़ती ही नहीं, बल्कि उनके बीच की दूरी प्रायः लुप्त हो जाती है । सुनीता के मनमें हरिप्रसन्न के प्रति अधिकार भाव से जुडी आन्तरिकता बढ़ने लगी । हरिप्रसन्न पर अनुभूत इस अधिकार भाव के मूल में सुनीता के हर्षित अहम् का प्रकाशन ही समझना चाहिए । सुनीता का मन बिरस, सूनेपन में विह्वल, उत्तप्त रेगिस्तान के समान जो था, उसमें हरिप्रसन्न का सान्निध्य और निकट व्यवहार नारी सहज वृत्तियों के पनपने देने और सहज जीवन के स्वाभाविक स्पन्दनों की मन्द हवा से फिर से जीवन्त करनेवाला अनुकूल साहचर्य पहुँचाने में समर्थ सिध्ध हुए । तभी तो सुनीता अपने अस्तित्व को अर्थपूर्ण, अपनी सत्ता को उपयोगी, अपने जीवन को सफल और सर्वोपरी अपने नारीसहज अहम् की चरितार्थता प्राप्त होती अनुभव कर सकी है ।

कुंठित नारी अहम् के पुनर्जागरित रूप का साक्षात्कार ‘सुनीता’ में कई स्थानों में दर्शनीय है । सुनीता के स्नान कर स्नानागार से अल्पवस्त्रधारिणी बनकर बाहर आते वक्त वहाँ उपस्थित होनेवाले हरिप्रसन्न के अप्रत्याशित दर्शन से वह एक बार सकुचा जाती है और जल्दी ही अन्दर लौट जाती है । हरिप्रसन्न का वह आकस्मिक सान्निध्य सुनीता में नारी सहज ब्रीला के उदय का कारण बनता है । लेकिन अगले क्षण में उस नारीगत अहंबोध को दबाकर उसमें हरिप्रसन्न के प्रति जागरित भाभी के अधिकार भाव से परिपुष्ट अभिभावक अहम् प्रबलता पा लेती

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

है । इसलिए वह पूर्वतः दुबारा हरिप्रसन्न के सामने उपस्थित होने में लज्जा का अनुभव नहीं करती है । पहले ही हरिप्रसन्न के जीवन में नया मोड़ देनेवाला सुनीता का यह अहम् एक सुधारात्मक शक्ति बनकर अपना दीप्त रूप उसके मन में स्थापित कर ले चुका था । स्नानागार से बाहर आई सुनीता के उस प्रौढ, सम्मोहक और लावण्यपूर्ण रूप में, यही कारण है, वह कामरूपिणी नारी के साथ ही साथ शक्तिस्वरूपिणी महादेवी का मंगलमय रूप भी देख लेता है अपने रूप सौन्दर्य और आकर्षक व्यक्तित्व के सामने स्तिमित रहनेवाले हरिप्रसन्न को देखकर सुनीता के अन्दर आत्मगौरव का अनुभव ही नहीं हुआ होगा, बल्कि अपने रूप से की आकर्षकता और सफलता पर एहसास भी निश्चित ही हुआ है ।

सहज जीवन के प्रवाहमय धारा से अलग होकर क्रान्ति के कठोर और कष्टमय रास्ते से चलकर कोमल-मानवीय भावनाओं और प्रेरणाओं को विस्मृत करके चलनेवाले हरिप्रसन्न को फिर से जीवन की स्वाभाविक धारा से जोड लेने की अपनी साधना में सुनीता उसके लिए सर्वाधिक उपर्युक्त साधन के रूप में इसी शारीरिक सौन्दर्य को ही आश्रय बनाती है । यह समझ सहज ही उसमें आत्मगर्व का कारण हो जाए तो अस्वाभाविक कुछ भी नहीं । वास्तव में वह गर्व आत्मविश्वास का धोतक हैं, जो उसके नारीगत अहम् से जुड़ा ही है । सुनीता इसी अवस्था में अपने सौन्दर्य की ओर हरिप्रसन्न को आकृष्ट करने की चेष्टा करती है, जिसमें वह जैसे उपन्यास के अन्त तक आते आते हम देखते हैं, पूर्ण रूप से सफल निकलती है ।

सुनीता का यह आन्तरिक पक्ष निर्मूल नहीं है । वह पति से प्राप्त अचंचल विश्वास की दृढता, अपने अन्तःकरण की शुध्धता एवं आत्मबल पर प्रतिष्ठित है । यही कारण है, जंगल के खुले एवं प्रलोभनकारी वातावरण में प्रेमविह्वल होकर, सबकुछ भूलकर, हरिप्रसन्न सुनीता को अपनाना चाहता है, अनुभव करना चाहता है, तो भावावेग के उस तूफान के सामने वह अचंचल रह सकी ही नहीं, बल्कि हरिप्रसन्न के अन्दर की ग्रंथि को निकालकर अपने भाभीत्व से उसे परास्त भी कर सकती है ।

अहम् के साक्षात्कार की दृष्टि से सुनीता का चरित्र विशेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि जैनेन्द्र की स्त्रीवादिता में परंपरागत नारी सत्ता के मंगलमय रूप को ही अधिक प्रधानता मिली है । सुनीता के अहम् की विशेषता यह है कि वह विस्तार दूसरों के लिए साधक तत्व के रूप में होता है । नारी का शक्ति रूप जितनी मात्रा में सुनीता में विस्तार पाता है उतना जैनेन्द्र के अन्य पात्रों में उपलब्ध नहीं होता ।

शोधक एवं प्रेरणा तत्व के रूप में नारी अहम् का भिन्न चेहरा प्रकट करनेवाली भुवन मोहिनी और अनीता भी मूलतः अपने नारीगत अहम् की परितोष साधना ही करती है । सुनीता में अपने विरस जीवन से कुंठित अहम् की ग्लानि से मुक्त होने के लिए हरिप्रसन्न के जीवन में सुधार कार्यो को लेकर प्रविष्ट होती है और उनके द्वारा अपने नारीगत अहम् को परितुष्ट कर लेती है । यद्यपि भुवनमोहिनी भी जितेन के पक्ष में उस कार्य में सफलता हासिल करके नारी और प्रेमिका के रूप में अपने अहम् को पूर्ण कर लेती है फिर भी सुनीता और भुवनमोहिनी की अन्तरिकता में फरक यह है कि सुनीता हरिप्रसन्न का प्रेमपात्र नहीं है । उन दोनों की घनिष्टता का आधार शुद्ध

ISSN : 2581-3943

Eklavya

A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal

School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)

Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in

Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

मानवीय संवेदना है । लेकिन भुवनमोहिनी के सुधार कार्य के पीछे रागात्मक संबन्ध है । जितेन के क्रान्तिकारी होकर सहज जीवन के दायरे के बाहर होने का कारण वह अपने को मानती है । इसलिए वह पश्चाताप में जलती रहती है । अपने मन में तीव्र रहनेवाले इस पश्चाताप के कारण वह अपने साधन संपन्न ससुराल में शान्ति नहीं पा सकती है । जितेन के जीवन के सामान्य रास्ते पर लाए बिना उसे चैन नहीं मिलेगा, यह वह पहचान लेती है । यह ज्ञान जितेन को सुधारने और क्रान्ति के मार्ग से मुक्त करने के दुष्कर कार्य में लगा देता है, अर्थात् वह उसके कामिनी भाव की स्वस्थता और नारीगत अहम् के चारितार्थ की साधना सिद्ध होता है । सुनीता में यह कामिनीगत अहम् नहीं है । वह हरिप्रसन्न के सामने भाभी के रूप में अभिभावक बनकर खडी होती है । इसलिए उसके शब्दों और व्यवहारों में अधिकार भाव का तेज है, जबकि भुवनमोहिनी में कामिनीगत समर्पण की दुर्निवार्यता और आँसू की आर्द्रता का बल रहता है । दोनों एक ही प्रकार की नारी सत्ता के विभिन्न पक्ष हैं, जो एक ही लक्ष्य की ओर प्रवृत हैं ।

इसी प्रकार अनीता भी अपने प्रेमी जयंत के मोहभंग और पतन से इतनी उदिग्न दिखती हे कि वह अन्दर ही अन्दर अनुभव करती है कि जयंत को ठीक किए बिना, उसे मंजिल पर पहुँचाए बिना उसकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी । जब वह जयंत से कहती है कि **"घर बांधकर बैठते तो मेरा भी घर बना रहता, नहीं तो ज्वालामुखी पर बैठी हूँ, कब सब जल जाएगा, कह नहीं सकती ।"** तो उसका अन्तःताप ही प्रकट होता है । भुवनमोहिनी और अनिता समान परिस्थिति में पडकर अपने नारीगत अहम् को कुंठित पाती हैं । दोनों की समस्या एक ही है । अर्थात प्रेमी के पतन की वजह वे हैं । यह आत्मानुभव उन्हें अपने नारीत्व की, नारीगत अहम् की खंडित स्थिति का एहसास कराता है । इसलिए इससे मुक्ति पाए बिना वे अपने जीवन को अनाकुल नहीं पा सकेंगी। लेकिन भुवनमोहिनी ही इसमें विजय पाकर अपने अहम् को तृप्त कर ले सकती है, जबकि अनिता खंडित अहम् लेकर रहने को विवश होती है ।

जितेन अपने क्रान्तिकारी दल के लिए जब रुपया माँगता है तो मोहिनी उसे इसलिए इनकार करती है कि वह जानती है कि रुपया देकर वह अपने परिश्रम में बाधा ही डालती है । कारण कि वह धनदान उसके अधिकाधिक गैर सामाजिक होने को प्रोत्साहित करेगा, जो उसके लक्ष्य के ठीक विपरीत है । इसी प्रकार जब वह जितेन से कहती है कि **"इस घर में मैं अविश्वासिनी बनूँ, इसकी कींमत तुम आगे दे सकोगे, यह भी मुझे विश्वास है, यही मेरा असल विश्वास है ।"** तो उसकी विवक्षा हे कि पति के साथ विश्वासघात करते हुए भी वह जितेन को ऐसा परिवर्तित कर लेगी कि वह हिंसा के मार्ग तो छोडकर साधारण जीवन के स्तर पर आ जाएगा । इस कथन में भुवनमोहिनी के अन्दर जागरित नारी अहम् पक्ष की विवृति ही देखने को मिलती है । जितेन की मुक्ति जितेन से बढ़कर मोहिनी की आन्तरिक विवशता है । वह विवशता उसके अहम् को, उसके प्रेयसी पक्ष को इतना झंकझोर कर देती है कि उसके लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करने या कोई भी कष्ट झेलने को वह तैयार होती है । उसका उदेश्य है, जितेन समझ लें, कि उसके ऐसे दबावों का, कठोरता का कोई असर उसपर नहीं

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

पडता । इसके द्वारा वह यह चाहती है कि उसके सामने उसका क्रान्तिकारी अहम् परास्त हो जाए । भुवनमोहिनी अपने प्रयास में सफल होती हे जितेन के मन का ऐसा परिवर्तन हो जाता है कि वह भुवनमोहिनी की द्रढ़ता के सामने अपने को परास्त पाता है । वह अपने दल को विसर्जित करता है, और भुवनमोहिनी को मुक्त करके अपने आपको पुलिस के हवाले कर देता है । भुवनमोहिनी समझ गई उसका व्रत पूरा हुआ ।

लेकिन वह चरितार्थता, अनिता के पक्ष में देखने को नहीं मिलती । भुवनमोहिनी की तरह अनिता भी अपने पूर्वप्रेमी के पतन से व्यथित है । वह दिल से चाहती है कि जयंत जीवन में तरक्की करे, गृहस्थी बसाए ताकि वह अपनी मनोव्यथा से मुक्त हो सके । जयंत कहीं टिक नहीं पाता, निश्चित लक्ष्य रख नहीं पाता । एक प्रकार से वह जीवन में भटक गया है । अनिता का दाम्पत्य जीवन अच्छा चलता है, लेकिन उसके मन को जयंत की याद सता रही है । वह भी अपने को भुवनमोहिनी के समान अपराधिनी अनुभव करती है । वह भी पश्चाताप से विवश है । इस अन्तर्व्यथा और पश्चाताप ने उसके स्त्री अहम् को खंडित कर दिया है । साफ मन द्वारा जयंत के उद्धार के उपायों के बारे में लगातार आकुल रहता है । वह जयंत को पत्रिका-संस्था से प्राप्त निम्न वेतन को छोडकर किसी बिज़नेस में लगने को प्रेरित करती है, पिता की मृत्यु के बाद घर में बसा देती है और उसके लिए आवश्यक आर्थिक सहायता पहुँचाती है । यही नहीं, जयंत की शादी के अवसर पर बहन की तरह कार्य संभालती है । अनिता को लगता है कि जयंत ठीक किनारे पर आ टिका है ।

कुछ ही दिनों के अन्दर उसे पता चलता है कि जयंत और चन्द्री का वैवाहिक जीवन संतोषपूर्ण नहीं है । चन्द्री से उसे पता चलता है कि जयंत और चन्द्री के बीच सहज नारी-पुरुष संबन्ध नहीं है और जयंत यौन असमर्थता का शिकार है । अनिता फिर से चिंतित हो उठती है और उसके अन्दर नारीगत अहम् का ऐसा जोरदार विस्तार होता है कि वह निश्चय कर लेती है कि जयंत को कुंठामुक्त बनाकर उसके व्यक्तित्व को पुनःप्राप्त करने का यथाशक्ति प्रयास किया जाना चाहिए । नहीं तो उसे पश्चाताप की आग में जलकर अपने जीवन को मिटाना पडेगा, अपने अन्दर की प्रेमिका को शान्ति नहीं मिलेगी । जब तक उस कामुकी अहम् को पश्चाताप विमुक्त नहीं कर पाती है, तब तक उसका दाम्पत्य जीवन स्वस्थ नहीं होगा । इस बीच चन्द्री जयंत को छोडकर चली भी जाती है । जयंत बिल्कुल टूट जाता है । वह आत्मनिन्दा का शिकार पड जाता है । यही अनिता के अन्दर का नारीगत अहम् सर्वाधिक शक्तिशाली होकर सामने आता है । दुर्घटना में पडे जयंत को अस्पताल से रिहा कराके होटल के कमरे में ले आती है और दोनों के बीच में वार्तालाप होता है । अनिता जयंत के प्रति अपने मन में भरी आस्था, प्रेम और उत्कंठा को व्यंजित करके कहती है कि वह जयंत को इस आत्मनाशक अवस्था से बचाने के लिए सबकुछ करने को तैयार है । उसका विचार है, जयंत के अन्दर पुरुषत्व के जागरण के लिए उसके अलावा कोई दूसरा समर्थ नहीं होगा । इसलिए जयंत के उध्धार के परिश्रम में अपने को सफल बना लेने के लिए, पराजय मानने को तैयार न होनेवाला उसका अहम्, ऐसा क्षुब्ध, विवश और तेज हो उठता है कि **"कहते कहते आवेश में वह उठ आई । कंधे पास बाहों से पकडकर मुझे झंझोरते हुए बोली, निर्दयी, राक्षस तुम चाहते क्या हो?"**

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

यहाँ अनिता में की सुनीता के समान पत्नीगत अहम् की दृढता और विश्वास तथा अपने शोधक अहम् सक्रिय होती तो है, लेकिन पराजय के अनुभव से उत्पन्न घोर निराशा और क्षोभ ही हाथ आते है । इस प्रकार सुनीता, विवर्त और व्यतीत में नारी पात्र पुरुष के चारित्रिक उध्धार और व्यक्तित्वलाभ में क्रियाशील होकर परितुष्ट होनेवाले नारी अहम् की शक्ति सामने आती है ।

संदर्भसूचिः

कुमार ए. (2011) जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, अमन प्रकाशन, कानपुर

मेहेर एस.आर. (2003) कहानीकार जैनेन्द्र, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर

राल्ते वी. (एन.ए.) जैनेन्द्र के कथा साहित्य का मानव मूल्यधर्मी अनुशीलन, दिल्ली अब तक, नई दिल्ली

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીની પદ્ધતિ

સંશોધક
રામદે. ડી. શિડા
(એમ.કોમ.એમ.એડ)
ગુજરાત વિદ્યાપીઠ
માર્ગદર્શક
સનાભાઇ ભીંસરા
પ્રાધ્યાપક
શિક્ષણ વિદ્યા શાખા
ગુજરાત વિદ્યાપીઠ-અમદાવાદ

સારાંશ -

જો કોઈ વ્યક્તિ સમાજમાં અધપતન ના સિદ્ધાંતોનું વિશ્લેષણ કરે તો તે એવું તારણ મેળવે કે વર્તમાન કટોકટી એ ચારિત્રના સંક્રમણ કાર્ડની કટોકટી છે અને જ્યાં સુધી શિક્ષણના હેતુઓ વિષયવસ્તુઓ અને પદ્ધતિઓને મૂળમાંથી જ બદલવામાં નહીં આવે ત્યાં સુધી ભારતના પુનરુથ્થાનની અપેક્ષા રાખી શકાય નહીં તત્કાલી નેતાઓ કે જેવો દેશ એ દેશની સ્વતંત્રતા માટે પોતાના સર્વસ્વનો ભોગ આપ્યો છે તેમના સ્વપ્નોને સાચી દિશામાં વળાંક આપવામાં જ જ્યારે આપણે એટલે કે જૂની પેઢીના માણસો જ નાપાસ થયા છે ત્યારે તેજસ્વીતા હિંમત નિર્ભયતા માનવતા પોતાની ફરજ પ્રત્યે

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

સમર્પણની ભાવના તથા સર્વ સામાન્ય જેવા તત્વો કે જે આ સંક્રમણના અણીના સમયે જરૂરી છે અને ચારિત્રની સ્થાપના કરી તેવા આ ગુણ ખીલવવા માટે આપણા બાળકની મદદ કરીએ આપણે આપણું અંશત ઋણ પણ ચૂકવી શકીએ સૂચક શબ્દ ચારિત્ર ઘડતર માટે કેળવણી અને મૂલ્ય શિક્ષણ

પ્રસ્તાવના

સૌપ્રથમ ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણી એટલે આપણે શું સમજીએ છીએ તે અંગે સ્પષ્ટતા કરી લેવી આપણા માટે જરૂરી છે સૌથી સરળ ભાષામાં કહીએ તો જે કંઈ સત્ય છે તે સર્વસ્વ અને જે સહાનુભૂતિ અને એકતા નું સંવર્ધન કરી શકે તે બધાને પોતાના જીવનમાં તથા સમાજ જીવનમાં મોટો સ્વરૂપ આપવા માટે ખાનદાની પૂર્વક અને હિંમતભેર લડવાની અને કામ કરવાની નિખાલસતા સાથે નિષ્કપટ નિર્ભય અને પ્રમાણિક બનવાની સુગ્રથિત ઈચ્છા એટલે ચારિત્ર ચારિત્રના ચાર પરિણામો છે શાળપણનો પરિમાણ પ્રબળ ઈચ્છા નું પરિમાણ કરુણા અને સાર્વત્રિક સ્નેહનું પરિમાણ અને સક્ષમતા કેળવાયેલા કૌશલ્ય અને અવિરત શ્રમનું પરિમાણ

ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણી ની પદ્ધતિ આપણે મૂલ્ય શબ્દ અંગે થોડું વિચારીએ શૈક્ષણિક તત્વજ્ઞાનના સંદર્ભમાં સમજીએ તો ઈચ્છનીય આદર્શો અને લક્ષ્યો જે તેમની જાતે જ અંતર્ગત છે અને જ્યાં સિદ્ધિ થાય અથવા સીધી કરવા માટે પ્રયત્નો હાથ ધરવામાં આવે ત્યારે આપણી પ્રકૃતિમાં સર્વોત્તમ તત્વો જેને ગણીએ છીએ તેમના એક અથવા અનેક કે બધા જ અંગો પ્રત્યે સિદ્ધાંતો ઊંડો ભાવ જગાડે છે તેને આપ શબ્દ સ્પર્શે છે આમ કહીએ તો મૂલ્ય શબ્દ મૂળભૂત રીતે વ્યાખ્યાયિત છે

ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીના કેટલાક મહત્વના મુદ્દાઓ સ્પષ્ટ કર્યા પછી કેટલીક બાબતોમાં આ કરવાનું અને નહીં કરવાનું એવી બાબતોમાં તાલીમ તરીકે શિક્ષકનો વિચાર કરવાનો નથી જે ધ્યાનમાં રાખવું જરૂરી છે એમ કહી શકાય કે કરવાનું અને

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

નહીં કરવાનું એ બાહ્ય કર્મને સ્પર્શે છે અને બાહ્ય કર્મો તેમના મૂલ્યો માત્ર આંતરિક પ્રેરક અને આંતરિક સભાનતા સંદર્ભમાં જ તારવે છે જેમાંથી તે ઉદ્ભવે છે સભાનતાની આપેલી સાચી સ્થિતિ કાર્યના જુદા જુદા સ્વરૂપે તેની જાતે અભિવ્યક્ત થાય અને આ કર્મોમાંનું પ્રત્યેક સાચું હોઈ શકે જ્યાં સુધી તેમના પ્રત્યેની પાછળ સભાનતાની સાચી સ્થિતિનું જીવંત આંદોલન હોય બીજી બાજુ તેના બાહ્ય સ્વરૂપમાં દેખીતી રીતે સારા અને સાચા જણા એવા કેટલાક કર્મો છે અને છતાં જો તે સાચા પ્રેરણા પ્રેરકની સ્વયંકૂર્તિ અભિવ્યક્તિઓ ન હોય તો ચારિત્રની દ્રષ્ટિએ તેનો કોઈ મૂલ્ય હોતું નથી એ પણ નોંધપાત્ર છે કે ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણી સમયપત્રકના સમગ્ર માળખામાં કોઈ એક ખાસ સાથે જોડી શકે નહીં દૈનિક જીવનના તમામ પ્રસંગો ચારિત્ર ઘડતરના આદર્શોની પ્રાપ્તિની વધુ નજીક વિદ્યાર્થીને લાવવા માટે ઉપયોગમાં લેવા જોઈએ એવા પ્રસંગો પણ બને જ્યારે બાળકો જંગલી આવેગો અને ઉત્કૃષ્ટ ભાવનાઓ દર્શાવે છે અને ઘણીવાર તેઓ બળવો પોકારે છે બાળકોને તેમની પોતાની વફાદારીઓ અને મિત્રતાની રોજીંદી લડાઈ તો હોય છે તેની ગંભી ઉદાસી અને ઇન્સક ઉત્સાહને ક્ષણો પણ હોય છે એવા પ્રસંગો હોય છે જ્યારે બાળકો ખીજાઈ શકે ચીડીયા બને અને હળવા હડતાળ પર ઉતરે આ બધા જ પ્રસંગો ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીના જ પ્રસંગો છે બાળકોમાં સાચી પ્રગતિનો યોગ્ય અર્થ શું છે તે અંગેની જાગૃતિ લાવવા સત્યને પ્રકાશ શું છે તે દર્શાવવા માટે શિક્ષકે આ બધા જ પ્રસંગો નો ધીરજ અને ખંત થી ઉપયોગ કરી શકે છે એ પણ નોંધવું જરૂરી છે કે ચારિત્ર ઘડતર માટે શિક્ષકની પ્રક્રિયામાં શિક્ષકનું ચારિત્ર સર્વોત્તમ મહત્વ ધરાવે છે આમ શિક્ષકો પાસે એક વધુ ચોક્કસ ભૂમિકા ની અપેક્ષા રાખવા માટે જરૂરી છે આ ભૂમિકા સારી રીતે અદા કરવા માટે જે પ્રત્યક્ષ રીતે અધ્યયન અધ્યાપન પ્રક્રિયામાં કાર્ય સાથે સુસંગત છે તે શું મેળ ભર્યું સાડપાનનું મિશ્રિત ઈચ્છા હિંમત કે એક વાક્યતા કરુણા અને વિવિધ પ્રકારની

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

ક્ષમતા નું સંવર્ધન કરવા તેમજ નિયંત્રણના પાઠો શીખવવા શિક્ષકોએ તેમની જાતે જ પ્રેરણા અનુભવી જોઈએ

જે પરિવર્તનની આપણે કલ્પના કરવી જોઈએ તેણે આપણી વર્તમાન પરીક્ષા વ્યવસ્થામાં મૂળભૂત ફેરફારની દરખાસ્ત પણ કરવી જોઈએ આપણી પરીક્ષા પદ્ધતિના અસંખ્ય અનિચ્છનીય પાસાઓ ઉપરાંત એક કે જેને આપણે મૂલ્ય વિરોધી કહી શકીએ છીએ તે માટેનું ખાસ કરીને કારણભૂત છે તેવી વૃદ્ધિ જે પરીક્ષા પસાર કરવાનો અને પદવી પ્રાપ્ત કરવાનો હેતુ શિક્ષણનો છે એ ખ્યાલને બક્ષે છે આ ખ્યાલની ટક્કર ઝીલવા અને આપણી પરીક્ષા પદ્ધતિઓમાં કેટલાક ફેરફારો દાખલ કરવા કે જેનાથી શૈક્ષણિક પ્રક્રિયા શિક્ષણના યોગ્ય હેતુઓ પરચુસ્તપણે વળગી શકે જે ચારિત્ર ઘડતરને કેન્દ્રના સ્થાને આપે ચારિત્ર ઘડતર માટેની કોઈ પણ અર્થપૂર્ણ કેળવણી ની જરૂરી શરત છે પરીક્ષા પદ્ધતિઓમાં મૂળભૂત થી પરિવર્તન

કેટલીક વાર દલીલ કરવામાં આવે છે કે કોઈ એક ખાસ અને વિશિષ્ટ વિષય કે જેને આપણે નૈતિક શિક્ષણ અથવા નીતિશાસ્ત્ર અથવા મૂલ્ય શિક્ષણ એનું નામ આપી શકીએ તેના કરતાં અસંખ્ય વિષયોની સાધન ભૂતતા દ્વારા મૂલ્યો સૌથી વધુ સારી રીતે શીખવી શકાય આ ખ્યાલ પાછળ નિશાન એક મહાન બળ છે અને આપણે તરત જ સન્માન થઇ શકીએ કે આપણી પાસે વિવિધ વિષયોના અભ્યાસોનો વિચાર પૂર્વક તૈયાર કરેલો કાર્યક્રમ હોવો જોઈએ કે જે ચારિત્ર ઘડતર માટે જરૂરી સાધન સામગ્રી તેના વિષયવસ્તુ અને પદ્ધતિ બંનેના સ્વાભાવિક પણે પૂરી પાડી

સમાપન-

ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીની ખાનગી બાબત એ છે કે જે રીતે શિક્ષક તેને પોતાના ચારિત્ર અને જ્ઞાનની પ્રારંભ ગતાના ઉદાહરણ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓમાં શોધની પ્રેરણા જગાડી શકે કે જે વ્યક્તિગત અને સામા સામુદાયિક જીવનમાં ચારિત્રના વધુ

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

મહત્વને સુસંગત છે પોતાની જાતના મૂલ્યોને મૂર્ત સ્વરૂપ આપીને જ શિક્ષક વિદ્યાર્થીઓમાં મૂલ્યો ખરેખર રીતે પ્રસરાવી શકે ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીના સંદર્ભમાં શિક્ષકની ભૂમિકા પર વધુ ભાર મૂકવા એ સમજવું જોઈએ કે કેળવણી એ સમાજની પેટા વ્યવસ્થા છે અને તેથી ચારિત્ર ઘડતરના હેતુમાં પ્રાણ પૂરવા માં અને ટેકો આપવામાં સમાજની ભૂમિકા પણ મહત્વની છે.

સંદર્ભ સૂચિ –

1 . બિપિનચંદ્ર વૈષ્ણવ(સંપાદક),માનવધિકાર ,નવસર્જન પબ્લિકેશન,અમદાવાદ.

2. ડો.રમેશ એચ. મકવાણા,પંચાયતી રાજ અને માનવાધિકારો, પાર્શ્વ પબ્લિકેશન,અમદાવાદ.

3. ડો.સીતારામ દેશમુખ, મૂલ્ય શિક્ષણ, યુનિવર્સિટિ ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, ગુજરાત રાજ્ય, અમદાવાદ.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

નવમાં ધોરણના અંગ્રેજી વ્યાકરણના પસંદિત Tense ' (કાળ) એકમના અધ્યાપન માટે દ્રશ્ય-શ્રાવ્ય કાર્યક્રમની સંરચના અને તેની અસરકારકતા

સંશોધક
ધનશ્યામભાઈ એસ. ભીલ
(એમ.એ.એમ.એડ્.,જીસેટ)
ગુજરાત વિદ્યાપીઠ
માર્ગદર્શક
સનાભાઇ ભીંસરા
પ્રાધ્યાપક
શિક્ષણ વિદ્યા શાખા
ગુજરાત વિદ્યાપીઠ-અમદાવાદ

સારાંશ -

સારાંશ પ્રસ્તુત અભ્યાસનો હેતુ પાવર પોઈન્ટ પ્રેઝન્ટેશનમાં દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ અને વ્યાખ્યાન પદ્ધતિ દ્વારા અધ્યાપન કાર્યથી વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિ પર થતી અસર ચકાસવાનો હતો. સંશોધન સમસ્યાના વિષયમાં અંગ્રેજી વ્યાકરણના ' Tense ' એકમના અધયાપન માટે દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમની રચના કરી હતી . જે વિષય તજ્જ્ઞોના માર્ગદર્શન હેઠળ રચાયો હતો . પ્રયોજકે પ્રસ્તુત અભ્યાસના પ્રયોગના અમલ માટે રાજકોટ શહેરની નોબલ શૈક્ષણિક સંકુલમાં અભ્યાસ કરતા ધોરણ નવના વિદ્યાર્થીઓને પ્રયોગપાત્ર તરીકે પસંદ કર્યા હતા . પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં સ્વતંત્ર ચલને બે કક્ષાઓ હતી . અહીં પ્રયોગ માટે વિદ્યાર્થીઓની આકસ્મિક રીતે પસંદ કરીને બે જૂથમાં

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

વહેચવામાં આવ્યા હતા . આમ શાળામાં પ્રાયોગિક અને નિયંત્રિત જૂથોની રચના કરી પ્રયોગનું અમલીકરણ હાથ ધરવામાં આવ્યુ હતું . પ્રયોગના અમલ બાદ પાત્રોને ઉત્તરકસોટી આપવામાં આવી હતી . પ્રયોગના અમલ બાદ શિક્ષક નિર્મિત કસોટી દ્વારા મેળવેલા પ્રાપ્તાંકો સંખ્યાત્મક સ્વરૂપની માહિતી હતી. ઉત્તરકસોટી પરના પ્રાપ્તાંકોની અંકશાસ્ત્રીય પ્રયુક્તિ ટી - કસોટી પૃથક્કરણ પ્રયુક્તિ દ્વારા શૈક્ષણિક સિદ્ધિનું પૃથક્કરણ કર્યું હતું . પ્રાપ્ત થયેલ સંખ્યા સ્વરૂપની માહિતીનું SPSS દ્વારા પૃથક્કરણ કરવામાં આવ્યું હતું. પ્રયોગના અંતે શિક્ષક નિર્મિત કસોટી પરની પ્રાયોગિક જૂથની સરાસરી 21.93 અને નિયંત્રિત જૂથની સરાસરી 18.87 હતી તથા પ્રાયોગિક જૂથનું પ્રમાણવિચલન 21.93 અને નિયંત્રિત જૂથનું પ્રમાણવિચલન 18.87 હતું. સારણી પરથી ટી-મૂલ્ય 3.003 જોવા મળેલ હતું જે 0.001 કક્ષાએ સાર્થક હતું.અંકશાસ્ત્રીય પૃથક્કરણને અંતે પ્રાપ્ત પરિણામો પરથી ઉત્કલ્પનાની ચકાસણી કરી હતી .

પ્રસ્તાવના

૨૧ મી સદી જ્યારે ટેક્નોલોજિના યુગ તરીકે ઓળખાય છે ત્યારે વિશ્વ સાથે જોડાઈ રહેવા માટે મનુષ્યએ ટેક્નોલોજિ સાથે કદમ મેળવવા પડશે . સમગ્ર વિશ્વ અને જ્ઞાનસંચારણની પ્રાપ્તિ કરવા ટેક્નોલોજિનો સહારો લઈ રહ્યો છે . વિશ્વ અત્યારે ઝડપથી બદલાઈ રહ્યું છે . માણસની જીંદગીના સો વર્ષમાં જેટલો બદલાવ નહી આવ્યો હોય તેટલો બદલાવ છેલ્લા વીસ વર્ષમાં આવ્યો છે અને ભવિષ્યમાં ટેક્નોલોજિના સહારે વિશ્વ કયાં હશે તેની કલ્પના કરવી પણ મુશ્કેલ છે . શિક્ષણ ક્ષેત્રમાં આવેલી ટેક્નોલોજિ યુગે સમગ્ર શિક્ષણ જગતને એક કર્યું છે . તેમાં અખબાર , સામયિક , રેડિયો , ટેલિવિઝન , કમ્પ્યૂટર વગેરે જ્ઞાનસંચારણ માટે અતિ અસરકારક સાધનો છે . તેમાં પણ આજના સમયમાં કમ્પ્યૂટર એ શાળા શિક્ષણનું હૃદય ગણાવી શકાય આથી કમ્પ્યૂટર પર આધારિત કાર્યક્રમ તૈયાર કરી વિદ્યાર્થીઓને વિષયવસ્તુનું અધ્યાપન કરાવવામાં આવે તો વિદ્યાર્થીઓનું અધ્યયન અસરકારક બનાવી શકાય . વર્તમાન શિક્ષણમાં ઘણા દોષો જણાય છે . આ દોષો મહદ્અંશે વર્ગશિક્ષણની અસરકારકતાને આધિન છે . તેના નિરાકરણ અર્થે ટેક્નોલોજિ આશિર્વાદ રૂપ નિવડી છે . બાળકને બહુમાધ્યમની મદદથી શીખવવામાં આવે તો તે લાંબા સમય સુધી તેની સ્મૃતિ પર રહે છે . તે બાબતના આધારે પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં વિદ્યાર્થીઓને કઠિન લાગતો અંગ્રેજી વ્યાકરણનો ' Tense ' (કાળ) મુદ્દાને દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમની મદદથી શીખવાનો પ્રયાસ કરવામાં આવ્યો હતો**સ માપન-**

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીની ખાનગી બાબત એ છે કે જે રીતે શિક્ષક તેને પોતાના ચારિત્ર અને જ્ઞાનની પ્રારંભ ગતાના ઉદાહરણ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓમાં શોધની પ્રેરણા જગાડી શકે કે જે વ્યક્તિગત અને સામા સામુદાયિક જીવનમાં ચારિત્રના વધુ મહત્વને સુસંગત છે પોતાની જાતના મૂલ્યોને મૂર્ત સ્વરૂપ આપીને જ શિક્ષક વિદ્યાર્થીઓમાં મૂલ્યો ખરેખર રીતે પ્રસરાવી શકે ચારિત્ર ઘડતર માટેની કેળવણીના સંદર્ભમાં શિક્ષકની ભૂમિકા પર વધુ ભાર મૂકવા એ સમજવું જોઈએ કે કેળવણી એ સમાજની પેટા વ્યવસ્થા છે અને તેથી ચારિત્ર ઘડતરના હેતુમાં પ્રાણ પૂરવા માં અને ટેકો આપવામાં સમાજની ભૂમિકા પણ મહત્વની છે.

હેતુઓ

૧ . નવમાં ધોરણના અંગ્રેજી વ્યાકરણના ‘ Tense ' (કાળ) એકમના અધ્યાપન માટે દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમની સંરચના કરવી .

૨ . નવમાં ધોરણના અંગ્રેજી વ્યાકરણના ‘ Tense ’ (કાળ) એકમ માટે દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય પદ્ધતિ અને વ્યાખ્યાન પદ્ધતિની અસરકારકતા તપાસવી

ઉત્કલ્પનાઓ-

સંશોધન ઉત્કલ્પના

1. વ્યાખ્યાન પદ્ધતિ દ્વારા અધ્યયન પામેલા વિદ્યાર્થીઓની ઉત્તર કસોટી પરની શૈક્ષણિક સિદ્ધિ પ્રાપ્તાંકોના સરેરાશ અંકો કરતા દ્રશ્યશ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા - અધ્યાપન કરેલ વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિના પ્રાપ્તાંકોના સરેરાશ અંકો સાર્થક . તફાવત હશે
2. દ્રશ્યશ્રાવ્ - ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપન પામેલા વિદ્યાર્થીઓની ઉત્તર કસોટીના પ્રથમ અમલીકરણ અને બીજા અમલીકરણને અંતે પ્રાપ્ત સિદ્ધિ પ્રાપ્તાંકોની સરાસરીઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત હશે .

શૂન્ય ઉત્કલ્પનાઓ

1. વ્યાખ્યાન પદ્ધતિ દ્વારા અધ્યાપન પામેલા વિદ્યાર્થીઓની ઉત્તર કસોટી પરની શૈક્ષણિક સિદ્ધિના પ્રાપ્તાંકોની સરેરાશ કરતા દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપન કરેલ વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિના પ્રાપ્તાંકો વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય .

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

2. દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપન પામેલા વિદ્યાર્થીઓના ઉત્તર કસોટીના પ્રથમ અમલીકરણ અને બીજા અમલીકરણને અંતે પ્રાપ્ત સિદ્ધિ પ્રાપ્તાંકોની સરાસરીઓ વચ્ચે સાર્થક તફાવત નહીં હોય .

અભ્યાસમાં સમાવિષ્ટ ચલો-

સ્વતંત્ર ચલ- અધ્યાપન પદ્ધતિ- બે કક્ષાઓ

કક્ષા -૧ : દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ

કક્ષા ૨ : વ્યાખ્યાન પદ્ધતિ

પરતંત્ર ચલ - પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં પરતંત્ર ચલ શૈક્ષણિક સિદ્ધિ હતી અને શિક્ષક રચિત કસોટી પર ના પ્રાપ્તાંકો સ્વરૂપે શૈક્ષણિક સિદ્ધિ હતી

વ્યાપવિશ્વ અને નમૂનો

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં વ્યાપવિશ્વ રાજકોટ જિલ્લાની ગુજરાતી માધ્યમની માધ્યમિક શાળાઓમાં ધોરણ નવના શૈક્ષણિક વર્ષ ૨૦૧૮-૧૯ દરમિયાન અભ્યાસ કરતા વિદ્યાર્થીઓનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો હતો.

પ્રસ્તુત સંશોધનમાં દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાન કાર્યની અસરકારકતાનો અને પરંપરાગત પદ્ધતિ દ્વારા અધ્યાપન કાર્યની તુલના કરવાની હોય તેથી સમગ્ર પ્રયોગ બે તબક્કામાં હાથ ધરવામાં આવ્યો હતો . ૧ . પ્રયોગની અજમાશ માટેનો નમૂનો ૨ .. પ્રયોગના પુનરાવર્તન માટેનો નમૂનો પ્રયોગની અજમાયશ માટેનો નમૂનો , પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં પ્રયોગની અજમાયશ માટે વિવેકાનંદ હાઈસ્કૂલના ધોરણ નવના વિદ્યાર્થીઓની આકસ્મિક રીતથી (ચિઠ્ઠી દ્વારા) બે વર્ગો પસંદ કરવામાં આવ્યા હતા . આ બંને પૈકી પ્રત્યેક વર્ગજૂથને કઈ પદ્ધતિથી અધ્યાપન કરાવવું તે નક્કી કરવા માટે આકસ્મિક રીતથી (ચિઠ્ઠી) દ્વારા બે ચિઠ્ઠીઓમાંથી એક ચિઠ્ઠી ઉપાડી તેના દ્વારા નીચે મુજબનો નિર્ણય કરવામાં આવ્યો હતો .

જૂથ - અ : દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપન (પ્રાયોગિક જૂથ) જૂથ - બ : પરંપરાગત પદ્ધતિ દ્વારા અધ્યાપન (નિયંત્રિત જૂથ) બંને જૂથ આકસ્મિક રીતે પસંદ પામેલા હતા તેમજ બંને જૂથમાં પાત્રોની સંખ્યા સમાન હતી . વિવેકાનંદ હાઈસ્કૂલમાં નવમાં ધોરણના વિદ્યાર્થીઓની આકસ્મિક રીતે પસંદગી કરવામાં આવેલ હતી . પસંદ કરાયેલા જૂથ - અમાં પાત્રોની સંખ્યા ૩૦

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

હતી . તેઓને દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપન કરાવવામાં આવ્યું હતું . જ્યારે તે જ કલાસમાં પસંદ થયેલા જૂથ – બ માં પાત્રોની સંખ્યા ૩૦ હતી . તેઓને પરંરાગત પદ્ધતિ દ્વારા અધ્યાપન કરાવવામાં આવ્યું હતું **ઉપકરણ**

પ્રયોજકે નવમાં ધોરણના ' Tense ' એકમ પર ઉત્તર કસોટીની રચના કરી હતી .

માહિતીનું એકત્રીકરણ

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપનની અસરકારકતા વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિના સંદર્ભમાં ચકાસવાની હતી . આ માટે પ્રયોગ અને પ્રયોગના પુનરાવર્તન દરમિયાન પ્રાયોગિક જૂથને દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ દ્વારા અને નિયંત્રિત જૂથને વ્યાખ્યાન પદ્ધતિ દ્વારા સમાન અધ્યાપન કરાવવામાં આવ્યું હતું . 15 તાસના સમગ્ર પ્રયોગમાં પ્રાયોગિક કાર્યને અંતે બંને જૂથના વિદ્યાર્થીઓને અંગ્રેજી વિષયના વ્યાકરણના Tense એકમની કસોટી આપવામાં આવી હતી . આ કસોટી પર વિદ્યાર્થીઓએ મેળવેલા પ્રાપ્તાંકો તેના સિદ્ધિ પ્રાપ્તાંકો હતા .પ્રયોજકે પ્રસ્તુત અભ્યાસ ૩૦ ગુણની શિક્ષક રચિત કસોટી રચી હતી . આ કસોટીની અજમાયશ બાદ કસોટીના પ્રશ્નોના પ્રતિચારોનું ગુણાંકન કરી ઉત્તરપત્રોની ચકાસણી કરી હતી . દરેક સાચા ઉત્તર માટે એક ગુણ અને ખોટા ઉત્તર માટે શૂન્ય ગુણ આપવાનું નક્કી કરાયું હતું . આ કસોટીમાં વધુમાં વધુ ૩૦ ગુણ અને ઓછામાં ઓછા શૂન્ય ગુણ મળે તેવી ગુણાંકન યોજના તૈયાર કરાઈ હતી . આ ગુણાંકન યોજનાનો ઉપયોગ કરી કસોટી પરના નમૂનાના પાત્રોએ આપેલ પ્રતિચારોનું આંક સ્વરૂપ ગુણાંકન કરવામાં આવ્યું હતું .

માહિતીનું એકત્રીકરણ-

પ્રયોગના અમલ બાદ શિક્ષક નિર્મિત કસોટી દ્વારા મેળવેલા પ્રાપ્તાંકો સંખ્યાત્મક સ્વરૂપની માહિતી હતી . આમ , પ્રસ્તુત સંશોધનની પ્રાપ્ત માહિતી અંતરાલ માપન કક્ષા હતી .

પૃથક્કરણની પ્રવિધિ

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં પ્રાપ્ત થયેલ સંખ્યા સ્વરૂપની માહિતીનું SPSS દ્વારા નીચે મુજબ સંખ્યાત્મક પૃથક્કરણ કરવામાં આવ્યું હતું. પ્રયોગના અમલ બાદ બંને શાળામાં બંને જૂથના પાત્રોની ઉત્તરકસોટી લેવામાં આવી હતી. બંને જૂથના વિદ્યાર્થીઓના ઉત્તરકસોટી પરના પ્રાપ્તાંકોની સરાસરી , પ્રમાણવિચલન અને ટી - ગુણોત્તર શોધવામાં આવ્યા હતા અને પ્રાપ્ત માહિતી પરથી પ્રાયોગિક

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

જૂથ અને નિયંત્રિત જૂથના વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિ વચ્ચેના તફાવતની ચકાસણી કરવામાં આવી હતી.

પ્રયોગ દરમિયાન અધ્યાપન પધ્ધતિ અને જૂથ અનુસાર પાત્રોની સંખ્યા,સરાસરી,પ્રમાણવિચલન અને ટી-મૂલ્ય

અધ્યાપન પધ્ધતિ	જૂથ	પાત્રોની સંખ્યા	સરાસરી	પ્રમાણવિચલન	ટી-મૂલ્ય
PPT દ્વારા અધ્યાપન	જૂથ -૧	30	21.93	4.44	3.003
વ્યાખ્યાન પધ્ધતિ દ્વારા અધ્યાપન	જૂથ -2	30	18.87	3.91	

સારણીનું અવલોકન કરતાં જણાય છે કે પ્રયોગના અંતે શિક્ષક નિર્મિત કસોટી પરની પ્રાયોગિક જૂથની સરાસરી 21.93 અને નિયંત્રિત જૂથની સરાસરી 18.87 હતી તથા પ્રાયોગિક જૂથનું પ્રમાણવિચલન 21.93 અને નિયંત્રિત જૂથનું પ્રમાણવિચલન 18.87 હતું. સારણી પરથી ટી-મૂલ્ય 3.003 જોવા મળેલ હતું જે 0.001 કક્ષાએ સાર્થક હતું.

અભ્યાસના તારણો

1. ધોરણ નવના અંગ્રેજી વ્યાકરણના ' Tense ' એકમ માટે દ્રશ્યશ્રાવ્ય - .. . કાર્યક્રમ વ્યાખ્યાન પદ્ધતિની તુલનામાં અસરકારક રહ્યો હતો
2. દ્રશ્યકાર્યક્રમ દ્વારા અધ્યાપન કરનાર વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિ શ્રાવ્ય - વ્યાખ્યાન પદ્ધતિ દ્વારા કરાવવામાં આવેલ અધ્યાપન કરતા ઊંચી હતી

શૈક્ષણિક ફલિતાર્થો

1. શિક્ષણમાં નાવિન્ય લાવવા વર્ગખંડમાં પાવર પોઈન્ટ પ્રેઝન્ટેશન કાર્યક્રમનો ઉપયોગ કરી શકાય .. .

2. કોઈ તજ્ઞ દ્વારા તૈયાર કરાયેલ PPT કાર્યક્રમ)દ્રશ્યનો (શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ - લાભ અન્ય શિક્ષક મેળવી અને અધ્યાપનમાં તેમજ ઉપચારાત્મક કાર્યમાં . તેનો વિનિયોગ કરી શકે છે
3. વિદ્યાર્થીઓની આતુરતા સંતોષવા માટે આ પ્રકારે થતું અધ્યયન અસરકારક પૂરવાર થઈ શકે .
4. શાળામાં જ્યાં શિક્ષકો પૂરતા પ્રમાણમાં ન હોય ત્યાં PPT કાર્યક્રમ -દ્રશ્ય - શ્રાવ્ય કાર્યક્રમ ઉપયોગી પૂરવાર થઈ શકે

સંદર્ભ સૂચિ –

અંબાસણા , એ . ડી . (૨૦૦૨) . **ઈન્સ્ટ્રકશન અલ્ટીમીડિયા પાવરપોઈન્ટ પ્રેઝન્ટેશન** . રાજકોટ : સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી .

ઉચાટ , ડી . એ . (૧૯૯૯) . **શિક્ષણ સંગ** . રાજકોટ : શિક્ષણશાસ્ત્ર ભવન , સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી .

ઉચાટ , ડી . એ . (૨૦૦૦) . **સંશોધનની વિશિષ્ટ પદ્ધતિઓ** . રાજકોટ : સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી .

ઉચાટ , ડી . એ . (૨૦૦૪) . **માહિતી પર સંશોધન વ્યવહારો** . રાજકોટ : સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી .

ઉચાટ , ડી . એ . (૨૦૦૯) . **શિક્ષણ અને સામાજિક વિજ્ઞાનમાં સંશોધનનું પદ્ધતિશાસ્ત્ર** . રાજકોટ : શિક્ષણશાસ્ત્ર ભવન , સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી .

દેસાઈ , એચ . જી . અને કે . જી . દેસાઈ (૧૯૯૭) . **સંશોધન પદ્ધતિઓ અને પ્રવિધિઓ (છઠ્ઠી આવૃત્તિ)** . અમદાવાદ : યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ , ગુજરાત રાજ્ય .

નિયામકશ્રી , ગુજરાત રાજ્ય (૨૦૧૭) . **અંગ્રેજી પાઠ્યપુસ્તક ધોરણ -૯** . ગાંધીનગર : ગુજરાત રાજ્ય શાળા પાઠ્યપુસ્તક મંડળ .

ISSN : 2581-3943

Eklavya

A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal

School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)

Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in

Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

Technological skills for future teacher education

Jadeja Nitaba Rupsinh
Phd Student (Education)
Saurashtra University Rajkot

Dr. Hinaben D. Raval
Assistant Professor of Teacher Education
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

Abstract

Technology has changed the way we live, the way we work, what we do for a living, how we live and even how we think. Just look around any home, any office, any workplace. Technology is there driving trucks, building cars, operating washing machines, delivering the news, helping us access information about almost anything through the internet.

While technology has affected every aspect of our social, educational, cultural, personal and economic life, understanding the future needs of students in education is not appropriate for technology neglect. Need new skills and new information sources to gain technical expertise for future teacher education. The value of any information can only be understood when it is according to our ratings. Technology has made it easy to access information and made it difficult without skill. Technology is best used as one component in a broad-based reform effort. Teachers must be adequately trained to use technology. Teachers may need to change their beliefs about teaching and learning. Technological resources must be sufficient and accessible. Effective technology use requires long-term planning and support. Technology should be integrated into the curricular and instructional framework. Trainer Teacher's Use of Software:

Worl processing, Spreadsheet, Database, Clipart, Graphics, Desktop Publishing, Integrated work, Poster Publisher, Electronic Board or LCD Projector or Multimedia Projector, Power point, MS Access and Excel, MS Word /Text Analyzer,Puzzle Generator, Appointment Book,

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

Authoring system Teacher Utility Programs: Electronics Grade Book, Test Authoring or Generators, Text Analysis Program, Puzzle Generators, Appointment Book or Planner.

Introduction

Technology has changed our lifestyle, the way we work, how to do it, how to live, and how we live, and how we think. Look at any home, any office, any workplace, and there is a crease in technology. Helps us access almost any kind of information through the internet. While technology has affected every aspect of our social, educational, cultural, personal and economic life, understanding the future needs of students in education is not appropriate for technology neglect. Need new skills and new information sources to gain technical expertise for future teacher education. A lot of questions can be found in the training using a tablet computer or other mobile device. It gives the opportunity to produce the necessary information and knowledge. Many skills will need to be developed to learn how to find, create and construct information related to relevant topics. We have to be able to find out how to search without the direct instruction from various blogs, Face book, YouTube etc. It is possible by Internet technology.

To learn how to use technology to develop student groups and group teaching skills in education. As the team-based work in the industry makes more work easier, this skill becomes more important. In schools, we are able to find the course without the direct instruction.

How You Learned Through Technology

We are aware of the technology that has given you more information. We must have the knowledge of how useful it is. But if you do not understand it, then there may be strange happenings, but you cannot get the content according to your feedback. The possibility of direction may increase, Hallucination also increases and non-essential information is collected.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

The value of any information can only be understood when it is according to our ratings. Technology has made it easy to access information and made it difficult without skill. If we do not allow the clear evolution of technological skills in the training, students cannot be prepared to live properly and work in a new technologically based world, their lack of education will harm them and the rest of us.

The role of technology has become important for the efficiency and effective use of knowledge and skills in education. Due to the increase in the knowledge and use of the teacher due to technology, students are more influenced. As a result, the direct use of educational technology in education has become inevitable. It is undoubtedly sure that the direction of future education will determine the educational technology.

Learning with technology

According to Siddiqui, In Today's world, computer-based technology is not a frill, but an important component of any modern curriculum. The term technology can be used to mean very wide variety of things, from computers to pencils.Students use the technology as a resource to help them develop higher order thinking, creativity, research skills, and so on. Generally, more advanced technology is involved in learning with.These factors, which repeatedly appear in the Education as crucial elements for successfully using technology, include the following:

- Technology is best used as one component in a broad-based reform effort.
- Teachers must be adequately trained to use technology.
- Teachers may need to change their beliefs about teaching and learning.
- Technological resources must be sufficient and accessible.
- Effective technology use requires long-term planning and support.
- Technology should be integrated into the curricular and instructional framework.

Trainer Teacher's Use of Software

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

- Worl processing - To type classified documents.
- Spreadsheet - Changes in the Statistics or words in the required documents.
- Database -Information maintenance Contextual About the issues of the students or the syllabus.
- Clipart -Add an example for a presentation any special details or of the situation graphical.
- Graphics - To automatically prepare tie the expected Shape or picture.
- Desktop Publishing - To prepare Attractive and interesting Fast running animals, Vehicles, Airplane etc. And to present it as per the requirement.
- Integrated `work`- Ability to attach Compiled of Word Processing, Spreadsheets, Database and graphics.
- Poster Publisher - An instant search of reference information: Atlas, Encyclopedia, Dictionary.
- Electronic Board or LCD Projector or Multimedia Projector -Introducing information for the whole class.
- Power point -Textbooks and graphic representations for computer projection.
- MS Access and Excel - Student's reading capability, professionalism, the numerical skills assurance
- MS Word /Text Analyzer - Verify the level of difficulty of the given reading exercise
- Verify the level of difficulty of the given read of assignment
- Puzzle Generator -Construct word puzzles from the words of the lesson.
- Appointment Book - TO maintain an appointment calendar
- Authoring system – Generate computer Lesson Plan.

Application of Internet

According to Shah D B, The Internet can powerfully extend your ability to find, manage and share information. The following sections provide references to client application software, and descriptions of the main features and capabilities of each Internet application: Web browsers:

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

- Mozilla: Firefoxal so has developed a suite of basic Internet applications.
- Arachne: A graphical full screen web browser for DOS computers.
- Lynax: A venerable web browser for character mode terminals without graphics. Originally
- developed at the University of Kansas Academic Computer Services Distributed Computing Group.
- NeoPlanet: Integrates several Internet applications together, including a browser, email, and chat.
- NetCaptor: A user –friendly browser built on top of internet Explorer.
- Opera : Small, fast, customizable application.

Teacher Utility Programs

- Electronics Grade Book - Keep records Achievement of work Student's
- Test Authoring or Generators - Formation of measurements of Tests, Questions, and Assessments.
- Text Analysis Program - To determine the adequacy of the level of reading material
- Puzzle Generators -Word knit Puzzles Creating Activities.
- Appointment Book or Planner - Electronic Appointment Book, Reminder letter.

References:

- Singh, Y.K., Shama, T.K., Upadhya,B. (2008). ***Educational Technology.*** New Delhi: A P H Publishing Corporation
- Siddiqui, M. H. (2008). ***Education Technology.*** New Delhi: A P H Publishing Corporation
- Shah, D. B. (1993). ***Shikshanil Prodhyogiki***. Ahamdabad : University granth nirmmantbord.
- Shah, D. B. (2006). **Shikshanma Computer.**Ahamdabad :NiravPrakashan.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Issue 7 Jun 2021- Nov 2021

- Raval, N. V. (2005). **Shikshan and Vyavsthama.**Prodhyogiki. Ahamdabad : NiravPrakashan.